|  |
| --- |
| 01. Januar |
| **Hochfest der Gottesmutter Maria – Neujahr** |
| Erste Lesung: Num 6,22-27; Zweite Lesung: Gal 4,4-7; Evangelium.: Lk 2,16-21 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 739 | Das alte Jahr vergangen ist |
|  | GL 732, 1-3 | Auf, Christen, singt festliche Lieder |
|  | GL 252, 1-3 | Gelobet seist du Jesu Christ |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 164 | Der in seinem Wort uns hält |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 245, 1-3 | Menschen, die ihr wart verloren |
|  | GL 237, 7 | Lob, Ehr sei Gott |
|  | GL 250. 1+3+5 | Engel auf den Feldern singen |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 67 2-3.5.6 u. 8 |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 65, 1 | Seine Gnade währet durch alle Zeit |
|  | GL 45, 1 | Der Herr krönt das Jahr |
|  | oder |  |
|  | GL 733, 1+2+4 | Komm, lasst uns niederfallen |
|  | GL 430 | Von guten Mächten |
|  | GL 736, 1+3 | Singen wir mit Fröhlichkeit |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 244 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Einst hat Gott zu den Vätern gesprochen durch die Propheten;* |
|  | *heute aber hat er zu uns gesprochen durch den Sohn.* |
|  |  |
| Credo: | GL 586, 2 | Das große Glaubensbekenntnis |
|  | GL 730, 1+3 | Seid nun fröhlich |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 243, 1-3 | Es ist ein Ros entsprungen |
|  | GL 784, 1-3 | Meine Zeit steht in deinen Händen |
| Sanctus: | GL 708 | Heilig |
|  | GL 388 | (Schubert-) Heilig |
| Agnus Dei: | GL 256, 1+3 | Ich steh an deiner Krippe hier |
| Danksagung: | GL 258, 1-3 | Lobpreiset all zu dieser Zeit |
|  | GL 405, 1-3 | Nun danket alle Gott |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 530, 1-4 | Maria, Mutter unsres Herrn |
|  | GL 534, 1+3+4 | Maria, breit den Mantel aus |